अशोक की कहानी

—कृष्ण कुमार

अशोक पढ़ना चाहता था। उसके परिवार में कभी कोई स्कूल नहीं गया था। पिता ज़मीन के छोटे—से टुकड़े पर खेती करते थे, अनपढ़ थे। अशोक ने कई बार ज़िद की, माँ को समझाया और अंत में पिता मान गए कि उसे पास के कस्बे के प्राइमरी स्कूल में भर्ती करा देंगे।

पहले दर्जे में हिंदी के अंतर्गत अध्यापक ने वर्णमाला सिखाई। एक—एक अक्षर की आवाज़ हफ़्तों रटाई, अक्षरों की आकृति बनाना सिखाया। जिन बच्चों को दिक्कत आती थी उनका हाथ पकड़ कर सिखाया। स्कूल में एक छोटा—सा ब्लेकबोर्ड था— खूब घिसा हुआ, चाक के बारीक कणों से इस कदर ढका हुआ कि लिखाई देखने के लिए सिर की नसों का सारा ज़ोर पुतली पर केंद्रित करना होता था। यह ब्लेकबोर्ड अगस्त से अक्टूबर तक वर्णमाला की आकृतियों से ढका रहा। बच्चे एक—एक अक्षर की आकृति बीसियों बार उतारते। इस तरह अंत में अशोक ने सारी हिंदी वर्णमाला सीख ली।

अब अध्यापिका ने पाठ्यपुस्तक की तरफ ध्यान दिया जिसमें हर अक्षर के पास एक शब्द लिखा था और एक चित्र बना था। **क** के पास लिखा था 'कबूतर'। अशोक शुरू से जानता था कि **क** का मतलब होता था **'कबूतर'**। इसलिए जब बहनजी ने अक्षर जोड़कर कबूतर पढ़ना सिखाना चाहा तो अशोक बहुत खुश हुआ। पर उसे यह नहीं समझ में आया कि दरअसल बहनजी के लिए 'क', 'बू', 'त' और 'र' का कुल योग कबूतर है। अशोक के दृष्टिकोण से **क** 'कबूतर' था। बहनजी के पास इतना समय नहीं था कि अशोक का दृष्टिकोण समझे। 'अशोक का भी कोई दृष्टिकोण है'— यह बात वे जानती थी या नहीं, मैं कह नहीं सकता। बहर—हाल उन्होंने सोचा कि अशोक **क** के साथ लिखे शब्द को देखकर 'कबूतर' कह रहा है यानी वह पढ़ना सीखने लगा है।

इसी तरह अशोक ने बाकी सब अक्षरों के साथ लिखे शब्द पढ़ना सीा लिया। अक्षरों की आकृतियाँ स्लेट और कॉपी पर उतारना तो वह पहले ही सीख चुका था। पहले दर्ज का अंत होते—होते वह अपनी प्रगति से काफ़ी खुश था। जब वह दूसरी में आया और कक्षा में उससे किताब पढ़ने को कहा गया तो वह इस तरह बोला—

'कबूतर का क, मटर का म, लंगूर का ल, **क—म—ल**। हर बार उसे इस तरह पढ़ते देखकर अध्यापिका कुछ नाराज़ हुईं। अशोक के हर प्रयास के बाद अध्यापिका उससे कहती— 'दूसरे बच्चों को ध्यान से सुनो, उनकी तरह पढ़ो।' अशोक दूसरे बच्चों को बहुत ध्यान से सुनता, पर यह समझने में असमर्थ रहता कि वह कहा┼ गलती कर रहा है। उसे लगता कि दूसरे ठीक

उसकी तरह पढ़ रहे हैं। यही शब्द वे पढ़कर सुना रहे हैं। फिर बहनजी उससे क्यों नाराज़ है? सौभाग्यवश बहनजी और भी कुछ बच्चों पर खीझती थीं, इसलिए अशोक अपने को एकदम अकेला नहीं पाता था। किसी तरह उसने दूसरी कक्षा के सारे दिन काट लिए। धीरे–धीरे उसकी **क** से कबूतर कहने की आदत भी कम हो गई। अब वह इस तरह पढ़ता था–

ग पे **उ** की मात्रा **गु**

ल पे **आ** की मात्रा **ला**

ब

क पे आ की मात्रा का

फ से बड़े **ऊ** की मात्रा **फू**

ल

गु–ला–ब का फू–ल

बहनजी उसे कभी–कभार ही पढ़ने को कहतीं, अक्सर उनके पास की टाटपट्टी पर बैठे बच्चे ही पूरा पाठ पढ़ देते। पर अशोक इस बात से उदास नहीं था। उसने एक पूरी कविता याद कर ली थी। दूसरी कक्षा के अंतिम दिनों में जब किताब दोहराते वक्त इस कविता को पढ़ने का नंबर आया तो अशोक ने बगैर सही पेज खोले पूरी कविता पढ़कर सुना दी। बहनजी उससे गुस्सा थीं कि उसने सही पेज क्यों नहीं खोला। अशोक खुश था कि वह बिना किताब देखे पढ़ने लगा है। उसके और बहनजी के दृष्टिकोणों का विरोध तीखा होता जा रहा था।

आखिरकार तीसरी कक्षा शुरू हुई। अशोक के गाँव के कई बच्चे स्कूल आना छोड़ चुके थे। उस पर भी दबाव पड़ा, पर वह अड़ा रहा। वह चाहता था कि जल्दी–जल्दी स्कूल खत्म करके पैसे कमाए। बहनजी कई बार कक्षा में बता चुकी थीं कि जो बच्चे स्कूल में आगे बढ़ते रहेंगे वे खूब बड़े आदमी बनेंगे और पैसे कमाएँगे।

पर तीसरी कक्षा की शुरुआत से ही विघ्न पड़ने लगे। 'भूगोल' नाम का एक नया विषय शुरू हुआ। अशोक को भूगोल की किताब में कुछ पल्ले नहीं पड़ा। पहले पेज पर लिखा था, ''हमारा ज़िला ऊबड़–खाबड़ और पथरीला है। ....यह कर्क रेखा से कुछ ऊपर स्थित है। .... इसकी भू–रचना पठारी प्रकार की है।'' कक्षा के कई बच्चे यह फर्राटे से पढ़ना सीख चुके थे। वे खडत्रे होकर पढ़ते, फिर कॉपी में उतारते। अशोक धीरे–धीरे पढ़ने की कोशिश करता तो बहनजी अधीर हो उठतीं। यही हालत एक और नए विषय 'विज्ञान' की घंटी में हुई। महीने भर में बहनजी अशोक से इतना परेशान हो गईं कि उन्होंने उससे कुछ भी कहना छोड़ दिया। उनकी अधीरता और नाराज़गी का धागा, जिससे अशोक अभी तब बंधा था, उदासीनता में बदल गया। अशोक

को लगा कि बहनजी को अब उससे कोई मतलब नहीं है। दिवाली की छुट्टी के बाद वह वापस स्कूल नहीं गया।

कुछ वर्ष बाद जिले में एक सर्वेक्षण हुआ। प्रांतीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् की ओर से दो सर्वेक्षक लंबे–लंबे फॉर्म लेकर आए। सर्वेक्षण का उद्देश्य यह पता लगाना था कि प्राथमिक शिक्षा में 'ड्राप–आउट' की दर इतनी ऊँची क्यों है? सर्वेक्षकों ने कई गाँव चुने और वहाँ जाकर माता–पिताओं के इंटरव्यू लिए। इस तरह स्कूल छोड़ने वाले सैकड़ों बच्चों के आंकड़े उनके शैक्षिक अनुसंधान की पकड़ में आ गए।

शिक्षा का कोई सर्वेक्षण हो रहा है, यह मुझे मालूम था। जब मुझे सर्वेक्षण का ठीक–ठीक उद्देश्य मालूम हुआ तो मैं आलस त्यागकर, अपना कौतूहल लिए सर्वेक्षकों से मिलने जा पहुँचा। उनका काम पूरा हो चुका था और वे जाने की जल्दी में थे। मैंने आग्रह किया कि वे मुझे अशोक की 'डेटा–शीट' दिखा दें। मैं यह जानने को बेहद उत्सुक था कि देश के आंकड़ों में अशोक का 'केस' किस तरह प्रस्तुत होगा। सैकड़ों बच्चों के पिताओं की 'डेटा–शीटों' में से एक को ढूँढ निकालने में सर्वेक्षक–बंधु आनाकानी कर रहे थे। मेंने बातचीत के दौरान अपनी हैसियत और डिग्री का ज़िक्र किया तो वे तैयार हो गए। ढूँढते–ढूँढते जब अशोक के पिता की 'डेटा–शीट' मिली तो उसे पढ़कर यह साफ़ निष्कर्ष निकलता था कि अशोक ने अपने परिवार की आर्थिक स्थिति के संदर्भ में, अपने पिता का हाथ बँटाने के लिए पढ़ना छोड़ा। सर्वेक्षण के समूचे विश्लेषण में अशोक की गणना 'परिवार की आर्थिक स्थिति' से प्रभावित 'ड्राप–आउट' बच्चों में की गई। अशोक एक ग्रामीण बाल श्रमिक घोषित हुआ।

मेरी आँखों में आँसू देखकर सर्वेक्षक–बंधु कुछ घबरा गए। वे बोले 'क्या यह बच्चा आपके रिश्ते में आता है?' मैंने कहा 'नहीं, पर मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ। मुझे लगता है आप उसका केस ठीक से समझ नहीं पाए हैं।' सर्वेक्ष्ज्ञक ने कहा 'अब एक–एक केस को कहाँ तक समझा जाए?' फिर कुछ बात बदलकर वह बोला 'आप तो दिल्ली में रहते हैं, नई शिक्षा नीति कब से लागू होने वाली है?

पढ़ने की दहलीज़ पर
NCERT Reading Cell